Sem-4 Paper 8b स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित मानव निर्माण की शिक्षा (1)

प्रश्न- स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मानव निर्माण की शिक्षा पर प्रकाश डालिए।

स्वामी जी के शैक्षणिक विचार शताब्दी बाद भी आज मानव निर्माण के लिए प्रासंगिक है। मानव निर्माण के लिए शिक्षा की क्या भूमिका होनी चाहिए इस पर उन्होंने विस्तार से विचार व्यक्त किये हैं। स्वामी जी के अनुसार, "मैं ऐसा धर्म चाहता हु जो हर व्यक्ति को अन्न, वस्त्र और शिक्षा देने के साथ-साथ उन्हें अपने सभी दुःख दूर करने की शक्ति प्रदान करे। हम भारतीय पहले हैं, गुजराती, बंगाली, मराठी इत्यादि बाद में। उनका कहना था कि सबको मिलकर इस देश की दरिद्रता और अज्ञानता को दूर करना चाहिए।"

स्वामी जी ने एक सफल व्यावहारिक मानव की बात कही है। वे शिक्षा को केवल जानकारी का ढेर नहीं मानते थे। उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे हमारा जीवन का निर्माण हो सके और मनुष्य में मानवता विकसित हो। मानव निर्माण के लिए उन्होंने लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षा की वकालत की। उनका मानना था कि शिक्षा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए।

स्वामी जी मनुष्य को ईश्वर का अंश मानते थे उनके अनुसार बालक में पूर्णता पहले से ही विद्यमान है केवल उसे अभिव्यक्त करना है। दूसरे शब्दों में स्वामी जी की शिक्षा का आदर्श है पूर्ण मानव का निर्माण करना जैसा कि उन्होंने कहा था कि, "शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" उनका मानना था कि सभी में ईश्वर विद्यमान है, शिक्षा द्वारा मानव में अनन्त धैर्य उत्साह शक्ति एवं साहस उत्पन्न करके मनुष्य में निहित पूर्णता की प्राप्ति करनी चाहिए। उस समय भारत में प्रचलित शिक्षा के स्थान पर भारत के लिए मानव निर्माण के लिए शिक्षा की परिकल्पना दिया कि "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है, और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।" स्वामी जी मनुष्य निर्माण के लिए व्यवहारिकता को बताते हुए कहा कि "हमको कार्य के क्षेत्र में व्यावहारिक बनना पड़ेगा, सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।" उनका स्पष्ट कथन था कि भीरु, म्लान और उदासीन व्यक्ति जीवन में कोई कार्य नहीं कर सकते, वहीं कर सकते हैं जो वीर, निर्भय एवं कर्मठ हैं। अतः प्रत्येक नर-नारी के लिए स्वामी जी का संदेश था "जीवन संग्राम में वीर बनो, निर्भय बनो क्योंकि भय मृत्यु है भय पाप है अवनति भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।"

Scanned with CamScanner

स्वामी जी शिक्षा के उद्देश्य में मानव निर्माण की बात कही है। शारीरिक शक्ति के लिए उन्होंने व्यायाम, खेल तथा योगाभ्यास पर बल दिया। बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, धार्मिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, अन्तर्राष्ट्रीयता तथा विश्व बन्धुत्व के भावना का विकास तथा देश सेवा की भावना के विकास पर बल दिया यह सभी उपर्युक्त उद्देश्य मानव निर्माण में सहायक है। स्वामी जी ने चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया। उनका विचार था कि मनुष्य के जैसे विचार होते हैं वैसा ही उसका चरित्र होता है। मानव निर्माण की शिक्षा में अच्छे चरित्र का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे विद्यार्थियों में कृषि, उद्योग, तकनीकी ज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से इतनी सामर्थ्य उत्पन्न करना चाहते थे कि वे आत्मनिर्भर बनें तथा समाज व राष्ट्र का कल्याण कर सकें। स्वामी जी का कहना था कि सम्पूर्ण विश्व से हम सीखें जो भी हमारे लिए कल्याणकारी है उसे ग्रहण करें। उनका कहना था कि भारत का अध्यात्म और पाश्चात्य का विज्ञान दोनों के समन्वय से ही विश्व व मानवता का कल्याण हो सकता है। स्वामी जी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना सबके अन्दर प्रवाहित करना चाहते थे। स्वामी जी सबको व्यावहारिक वेदान्त की शिक्षा देना चाहते थे। वेदान्त की शिक्षा है कि चर-अचर अर्थात सभी भूतों में ब्रह्म विद्यमान है। यह भाव या यह शिक्षा मनुष्य में आ जाय तो क्या मनुष्य एक दूसरे को कष्ट पहुँचायेगा या शोषण करेगा नहीं करेगा। वेदान्त की ही शिक्षा है 'सर्वभूतहिते रताः' (गीता) अर्थात सभी भूतों ~~आदि~~ अर्थात सभी प्राणियों के प्रति हित के जो रत है इससे बड़ी शिक्षा मानव निर्माण का क्या हो सकता है?